रमज़ानुल मुबारक

रमज़ानुल मुबारक का महीना बड़ा पाकीजा और बा बरकत वाला महीना है इस महीने के अन्दर अल्लाह रब्बुल आलमीन नेक आमाल का बदला दूसरे महीनों के मुकाबले में ज्यादा और बढ़ा चढ़ा कर अता करता है, रमजानुल मुबारक का महीना तमाम महीनों का सरदार है, इसी वजह से इस महीने में कुछ इबादतें ऐसी आई जिस से दूसरे महीने खाली हैं।

मिसाल के तौर परः-

1. कुरआन पाक का नुजूल। 2. बा जमाअत तरावीह की नमाज़ का एहतमाम। 3. तिलावते कुरआन-ए-मजीद। 4. सहरी व इफ्तार। 5. जन्नत के दरवाजों का खुलना। 6. जहन्नुम के दरवाजों का बन्द होना। 7. शयातीन का कैद कर दिया जाना। 8. मस्जिद में एअतकाफ करना। 9. शबे कद्र (इस एक रात की इबादत हजार महीनों की इबादत से बेहतर है।) 10. ईद की नमाज से पहले-पहले सदका-ए-फित्र अदा करना। 11. और सबसे अहम इबादत रोजा रखना।

रोजे के बारे में अल्लाह तआला कुरआन-ए-मजीद के अन्दर सुराह बकरा सुराह नं. 2 आयत नं. 183 में फरमाता है,
ऐ ईमान वालो! तुम पर रोजा रखना फर्ज किया गया है जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फर्ज किया गया था, ताकि तुम तक़्वा इख्तियार करो।

इसी तरह हज़रत इब्ने उमर रजि. से मरवी है कि नबी करीब स. अ. व. ने फरमाया कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीजों पर रखी गई है।

1. यह गवाही देना के अल्लाह तआला के अलावा कोई माअबूद (इबादत के लायक) बरहक़ नहीं और यकीनन मोहम्मद स. अ. व. अल्लाह के रसूल हैं।
2. नमाज़ क़ाइम करना। 3. ज़कात अदा करना। 4. हज करना। 5. और माहे रमज़ान के रोज़े रखना (सही बुखारी हदीष नं. 08)

अल्लाह तआला हम सब को रमज़ान के पूरे रोजे रखने और ज्यादा से ज्यादा इबादत करने की तौफीक़ अता फरमाए ''आमीन''

मिन-जानिबः- इब्राहीम (अ.स.) एकेडमी, सुजानगढ़